रिकार्ड–इस पाप की दुनियां से.....। यह है पढ़ाई। हरेक बात समझनी है। और जो भी सतसंग आदि है वह सब हैं भक्तिमाग की। भक्ति करते2 बेगर बन गये हैं। वह बेगर्स ,फकीर और हैं। तुम और किसम के बेगर हो। तुम अमीर थे,अभी फकीर बने हो। यह किसको भी पता नहीं कि हम अमीर थे। तुम ब्राह्मण बच्चे जानते हो हम विश्व के मालिक अमीर थे। अमीरचंद से फकीरचंद बने हैं। अब यह है पढ़ाई, जिसको अच्छी रीति पढ़ना है। धारण करना है और धारण करने की कोशिश करनी है। अविनाशी ज्ञान रत्न धारण करनी है। आत्मा रूप–बसंत है ना। आत्मा ही धारण करती है। शरीर तो विनाशी है। काम की जो चीज नहीं होती है उसको जलाया जाता है। शरीर भी काम का न रहता है तो उसको जलाया जाता है। आत्मा को तो नहीं जलाते। हम आत्मा हैं। जबसे रावणराज्य शुरू हुआ है तो मनुष्य देहअभिमान में आ गये हैं। मैं शरीर हूं यह पक्का हो जाता है। आत्मा तो अमर हैं। अमरनाथ बाप आय आत्माओं को अमर बनाते हैं। वहां तो अपने समय पर अपनी मर्जी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं ;क्योंकि आत्मा मालिक है ना। जब चाहे तब शरीर छोड़े। वहां शरीर की आयु भी बड़ी होती है। सर्प का भी मिसाल है। अभी तुम जानते हो यह तुम्हारे बहुत जन्मों के अंत के जन्म की पुरानी ..... है। 84जन्म पूरे लिए हैं। कोई की 60/70 जन्म की है। कोई की 50 है। त्रेता में जरूर आयु कुछ न कुछ कम होती है। सतयुग में.....आयु होती है। अभी पुरुषार्थ करना है कि हम पहले2 सतयुग में आवें। वहां ताकत रहती है। तो अकाले मृत्यु नहीं होता। ताकत कम होती है तो आयु भी कम हो जाती है। अब जैसे बाप सर्वशक्तिमान है। तुम्हारी आत्मा को भी सर्वशक्तिवान बनाते हैं। एक तो पवित्र बनना है और याद में रहना है। तब शक्ति मिलती है। बाप से शक्ति का वर्सा तुम लेते हो। पापात्मा तो शक्ति ले न सके। पुण्यात्मा बनती है तो शक्ति मिलती है। यह खयाल करो हमारी आत्मा सतोप्रधान थी। हमेशा शुभ भावना रखनी चाहिए। ऐसे नहीं कि सब थोड़े ही सतोप्रधान बनेंगे। कोई तो सतो भी होंगे। नहीं। अपने को समझना चाहिए पहले2 हम सतोप्रधान थे। निश्चय से ही सतोप्रधान बनेंगे। ऐसे नहीं कि हम कैसे सतोप्रधान बन सकेंगे। फिर ढरक जाते हैं। याद की यात्रा पर नहीं रहते। जितना हो सके पुरुषार्थ करना चाहिए। अपन को आत्मा समझ सतोप्रधान बनना है। इस समय सभी मनुष्य मात्र तमोप्रधान हैं। तुम्हारी आत्मा भी तमोप्रधान है। अब आत्मा को सतोप्रधान बनना है। बाप की याद से ही सतोप्रधान बनेंगे। साथ2 सर्विस भी करेंगे तो ताकत मिलेगी। समझो कोई सेंटर खोलते हैं तो बहुतों की आशीर्वाद उनके उपर आवेगी। मनुष्य धर्मशाला आदि बनाते हैं कि मनुष्य आये विश्राम पावे। आत्मा खुश होगी ना। रहने वालों को फरहत मिलती है। तो उनकी आशीर्वाद बनाने वाले को मिलती है। फिर नतीजा क्या होगा?दूसरे जन्म में वह सुखी रहेगा। मकान अच्छा मिलेगा। मकान का सुख मिलेगा। ऐसे नहीं कि कब बीमार न होगा। सिर्फ मकान अच्छा मिलेगा। हास्पिटल खोले होंगे तो तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। यूनिवर्सिटी खोले होंगे तो पढ़ाई अच्छी होगी। स्वर्ग में तो यह हास्पिटल आदि होते नहीं। यहां तुम पुरुषार्थ से 21जन्मों की प्रालब्ध बनाते हो। बाकी वहां हास्पिटल ,कोर्ट,पुलिस आदि कुछ नहीं होगा। अभी तुम चलते हो सुखधाम में। वहां वजीर भी होता नहीं। उंच ते उंच खुद महाराजा–महारानी ,वे वजीर की राय थोड़े ही लेंगे। राय तब मिलती है जब बेवकूफ बनते हैं। जब विकारों में गिरते हैं। रावणराज्य में बिल्कुल ही तुच्छबुद्धि ,बेवकूफ बन जाते हैं। अभी तुच्छबुद्धि चल रहे हैं इसलिए विनाश का रास्ता ढूंढ रहे हैं। खुद समझते हैं हम भारत को बहुत उंच बनाते हैं ;परंतु यह तो और ही नीचे गिरते जाते हैं। अब विनाश सामने खड़ा है। तुम बच्चे जानते हो अभी हमको घर जाना है। हम भारत की रुहानी सेवा कर अपना राज्य स्थापन करते हैं। फिर हम राज्य करेंगे। गाया भी जाता है फालो फादर। फादर टू सन। सन शोज फादर। बच्चे जानते हैं शिवबाबा ब्रह्मा के तन में आय हमको पढ़ाते हैं। समझाना भी ऐसे है। हम ब्रह्मा को भगवान या देवता नहीं मानते। तो पतित हैं ना। बाप ने पतित शरीर में प्रवेश किया है। झाड़ में देखो उपर चोटी में खड़ा है।

पतित हैं फिर नीचे पावन बनने लिए तपस्या कर फिर देवता बनते हैं। (तपस्या)करने वाले हैं ब्राह्मण। तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियां सब राजयोग सीख रहे हो। कितना क्लीयर है। इसमें योग बड़ा अच्छा चाहिए। याद में न रहेंगे तो मुरली में वह ताकत न रहेगी। ताकत मिलती है शिवबाबा की याद से। याद से ही तुम सतोप्रधान बनेंगे। नहीं तो सजा खाकर फिर कम पद पाय लेंगे। मूल बात है याद की। जिसको ही भारत का प्राचीन योग कहा जाता है। नालेज का किसको पता नहीं है। आगे ऋषि–मुनि कहते आये हैं। रचता और रचना की आदि ,मध्य,अंत को हम नहीं जानते। तुम भी आगे कुछ नहीं जानते थे। भक्तिमार्ग में सरते (सड़ते) रहते थे ;क्योंकि भक्तिमार्ग में विकार भी है। वाममार्ग में बिल्कुल सर (सड़) कर काले हो जाते हैं। इन 5विकारों ने ही तुमको बिल्कुल बर्थ नॉट अपेनी बनाया है। यह पुरानी दुनियां जलकर खतम हो जानी है। कुछ भी रहने का नहीं है। तुम भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार भारत को स्वर्ग बनाने का तन,मन,धन से सेवा करते हो। प्रदर्शनी में भी तुमसे पूछते हैं तो बोलो हम ब्रह्माकुमारियां अपने तन,मन,धन से रामराज्य श्रीमत पर स्थापन कर रहे हैं। गांधी तो ऐसे नहीं कहते थे कि श्रीमत पर रामराज्य स्थापन करते हैं। यहां तो इसमें श्री श्री 108बाप बैठे हैं ना। 108की माला भी बनती है। माला तो बहुत बड़ी बनती है। उसमें 8, 108अच्छी मेहनत करते हैं। नम्बरवार तो फिर बहुत हैं, जो अच्छी रीति मेहनत करते हैं। रुद्रपूजा होती है तो शालीग्रामों की भी पूजा होती है ना। जरूर कुछ सर्विस की है तब तो पूजा होती है। तुम ब्राह्मण....सेवाधारी हो। सबकी आत्मा को जगाने वाले हो। मैं आत्मा हूं यह भूलने से देहअभिमान आ जाता है। मैं फलाना हूं। इन्दिरा गांधी हूं। उनको यह थोड़े ही पता है मैं आत्मा हूं। यह मेरा शरीर का नाम है। हम आत्मा कहां से आती हैं यह भी कोई को जरा भी खयाल नहीं। यहां पार्ट बजाते2 शरीर का भान पक्का हो गया है। बाप समझाते हैं बच्चे अब गफलत छोड़ो। माया बड़ी जबरदस्त है। तुम युद्ध के मैदान में (हो)। तुम आत्माभिमानी बनो। आत्माओं और परमात्मा का यह मेला है। इस मेले पर कोई दुकानें आदि तो नहीं हैं। यह तो परमात्मा और आत्माओं का मेला लगता है। गायन भी है आत्मा और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। इनका भी अर्थ वह नहीं जानते। तुम अभी जानते हो। हम आत्माएं बाप के साथ रहने वाले हैं। वह आत्माओं का घर है। बाप भी वहां है। उनका नाम है शिव। शिवजयंती भी गाई जाती है। दूसरा कोई नाम देना ही नहीं चाहिए। बाप कहते हैं मेरा असली नाम है कल्याणकारी शिव। कल्याणकारी रुद्र नहीं कहेंगे। कल्याणकारी शिव कहते हैं। काशी में भी शिव का मंदिर है ना। वहां साधु लोग मंत्र जाय जपते हैं। शिवकाशी विश्वनाथ गंगा। अब बाप समझाते हैं शिव जो काशी के मंदिर में बिठाया है उनको कहते हैं विश्वनाथ। अब मैं तो विश्वनाथ हूं नहीं। विश्व के नाथ तुम बनते हो। मैं बनता ही नहीं हूं। भक्तिमार्ग में हरेक अक्षर में झूठ है। विश्व का नाथ भी तुम बनते हो और ब्रह्मतत्व के नाथ भी तुम बनते हो। तुम्हारा वह घर है। वह राजधानी है। मेरा घर तो एक ही है ब्रह्मतत्व। मैं स्वर्ग में आता नहीं हूं। न मैं नाथ बनता हूं। मेरे को कहते ही हैं शिवबाबा। मेरा पार्ट पतितों को पावन बनाना है। बाप सबसे जास्ती सर्विस करते हैं। मूतपलीतों को पावन बनाते हैं। सिख लोग कहते हैं मूतपलीती कपड़धोये ;परंतु अर्थ नहीं समझते। महिमा भी गाते हैं उनका। ओंकार–अजोनी माना जन्म–मरण रहित। मनुष्य तो 84जन्म लेते हैं। बाप कहते हैं मैं जन्म नहीं लेता हूं। मैं इनमें प्रवेश करता हूं। इनकी आम जानती है बाबा मेरे साथ इकट्ठा बैठा हुआ है। तो भी घड़ी2 याद भूल जाते हैं। इस दादा की आत्मा कहती है मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ती है। ऐसे नहीं कि मेरे में बैठा हुआ है तो याद अच्छी रहती है। नहीं। भल एकदम इकट्ठा है। मैं जानता हूं,मेरे पास है,इस शरीर का वह जैसे मालिक है। फिर भी भूल जाता हूं। बम्बई में मकान लिया। सारा मकान किराया पर दिया। बाकी एकेक कमरे में मालकिन बैठी थी। बाबा को भी यह माकन दिया है रहने के लिए। बाकी एक कोने में बैठता हूं। बड़ा आदमी हुआ ना। विचार करता हूं बाजू में मालिक बैठा है। तो भी याद नहीं कर सकता हूं। माया बड़ी जबरदस्त है।

कितनी कोशिश करता हूं ,भोजन पर बैठता हूं, समझता हूं यह रथ उनका है। ये इनकी सम्भाल करते हैं। मुझे शिवबाबा खिलाते भी हैं। मैं उनका रथ हूं। कुछ तो खातिरी करेंगे। इस खुशी में खाता हूं। दो/चार मिनट याद फिर भूल जाता हूं। तब समझता हूं बच्चों को कितनी मेहनत लगती होगी। इसलिए बाबा समझाते रहते हैं जितना हो सके बाबा को याद करो। बच्चों को कितनी मेहनत लगती होगी। इसलिए बाबा समझाते रहते हैं जितना हो सके बाबा को याद करो। बहुत2 फायदा है। यहां तो थोड़ी ही बात में तंग हो पढ़ाई को छोड़ देते हैं। बाबा2 कह फिर फारकती दे देते हैं। बाप को अपना बनावंती,ज्ञान सुनावंती,पश्यन्ति,दिव्य दृष्टि से स्वर्ग देखन्ती ,रास करन्ती,अहो मम माया मुझे फारकती देवन्ती,भागन्ती। जो विश्व का मालिक बनाते हैं उनको फारकती दे देते हैं। विलायत में बहुत फारकती देते हैं। बड़े2 नामी–ग्रामी भी फारकती दे देते हैं। उपर से ऑर्डर मिलती है तब फारकती देते हैं। बाहर में बहुत रिवाज है। यहां तो बहुत गंद है। अभी तुमको गटर से निकालते हैं। रास्ता बताया जाता है। ऐसे नहीं कि हाथ से पकड़ ले जाना है। इन आंखों से तो अंधे नहीं हैं। हां, ज्ञान का तीसरा नेत्र न होने के कारण अंधे हैं। अभी आत्मा कहती है हमारी आंखें खुल गईं। ज्ञान का तीसरा नेत्र तुमको मिलता है। तुम सृष्टि की आदि,मध्य,अंत को जानते हो। यह 84का चक्र बुद्धि में फिरना चाहिए। तुम्हारा नाम है स्वदर्शनचक्रधारी। यह भी बाप समझाते हैं। एक बाप को ही याद करना है। दूसरे कोई की याद न रहे। पिछाड़ी में यह अवस्था रहे। जैसे स्त्री का पुरुष के साथ लव होता है। जब वह मरता है तो उनके पिछाड़ी चिक्षा पर बैठ जाती है। बस, मैं इस पति के साथ फिर मिलूं। यह भावना पूरी होती है ;परंतु नाम ,रूप,देश,काल सब बदल जाता है। तो उनका कितना लव रहता है। यहां तुमको कोई उस चिक्षा पर नहीं चढ़ना है। तुमको ज्ञान चिक्षा पर बैठ बाबा की याद में रह शरीर छोड़ना है। फिर भी वह पतियों का पति है। बापों का बाप है। कितना उन पर लव होना चाहिए। इतना लव है बाप पर?उठते–बैठते उनको याद करना है। स्त्री का पति साथ बहुत प्रेम होता है। पति का भी स्त्री के साथ प्रेम होता है। वह प्रेमवती तो यह प्रेमवता होता है। दूसरे जन्म में बहुत प्यार में रहते हैं। ऐसे बहुत घर होते हैं। स्त्री–पुरुष तथा परिवार बड़े प्यार से आपस में रहते हैं। जैसे स्वर्ग लगा रहता है। 5/6बच्चे इकट्ठे रहते हैं। सुबह को उठ सब पूजा में बैठते। कोई झगड़ा आदि घर में नहीं। एकरस रहते हैं। यहां तो एक ही घर में कोई राधास्वामी,कोई फिर धर्म को ही नहीं जानते। थोड़ी बात पर नाराज हो पड़ते हैं। तो बाप कहते हैं इस अंतिम जन्म पूरा पुरुषार्थ करना है। अपना पैसा भी सफल कर अपना कल्याण करो तो भारत का भी कल्याण होगा। तुम जानते हो कि हम अपनी राजधानी श्रीमत पर फिर से स्थापन करते हैं। याद की यात्रा से और सृष्टि की आदि,मध्य,अंत को जानने से हम चक्रवर्ती राजा बन जावेंगे। फिर उतरना शुरू होगा। फिर अंत में बाबा के पास आ जावेंगे। श्रीमत पर चलने से ही उंच पद पावेंगे। बाप कोई फांसी पर नहीं चढ़ाते। एक तो कहते हैं पवित्र बनो। अपवित्र मनुष्य पवित्र देवताओं के आगे माथा टेकते हैं। तो पवित्र निर्विकारी बनना अच्छा है ना। इस समय सभी मनुष्य मूतपलीती हैं। जनावर फिर भी मनुष्य से अच्छा है। (मोर का मिसाल) कैसे आंसू से गर्भ होता है। कहते हैं यह भारत का उंच ते उंच पक्षी है। खूबसूरत भी है। डांस भी अच्छा करते हैं। उनको नेशनल बर्ड कहते हैं। आजकल तो देखो हनुमान,बंदर आदि की भी पूजा करते रहते हैं। जनावर की पूजा करनी है तो सबसे अच्छा मोर है। इनकी पूजा करनी चाहिए ;परंतु अकल है नहीं। अभी तुम्हारी पारस बुद्धि बनती है। यहां हैं पत्थर बुद्धि ;क्योंकि पतित हैं ना। वहां कोई पतित होता नहीं। देवी–देवताएं भी बहुत थोड़े हैं। फिर आस्ते2 वृद्धि होती है। देवताओं का है छोटा झाड़। 9लाख। फिर कितनी वृद्धि हो जाती है। आत्माएं सब उतरते रहते हैं। अभी तो साढ़े तीन सौ करोड़ आत्माएं सभी एक्टर्स हैं। यह बना बनाया खेल है। बाप बैठ समझाते हैं। शुरू से

लेकर है पहले2 आदि सनातन देवी देवता धर्म। फिर वह ही आधा कल्प बाद वाम मार्ग में जाने से पतित बन जाते हैं। इसलिए अपन को देवी देवता कहलाय न सके। उन्हों की चित्र बनाय नमन करते हैं। अब बाबा कहते हैं आदि सनातन तो देवी देवता धर्म था। फिर हिंदू कहां से आये?और जो धर्म है,जैसे क्रिश्चियन धर्म स्थापन हुआ तो वह अंत तक चला आ रहा है। वह ही नाम चला आता है। यह देवी देवता धर्म वालों का फिर हिंदू नाम कैसे आ गया?हम तो हैं आदि सनातन देवी देवता धर्म के। तुम इतना समझाते हो तो भी समझते नहीं। देवी देवताएं विश्व के मालिक थे। वह भी कोई की बुद्धि में नहीं है। अभी तुमको बाप कितना समझदार बनाते हैं। समझदार मनुष्य सालवेंट होते हैं। बेसमझ मनुष्य इनसालवेंट होते हैं। बाप कहते हैं तुम भारतवासियों ने 84जन्म लिए हैं। 84लाख का कितना बड़ा गपोड़ा लगाय दिया है। अभी तुम बच्चे इन सभी बातों को समझते हो। तुम तो कहते हो कहां जल्दी स्वर्ग बन जाये तो सुखी हो जावें। बाबा अजन देरी है क्या?बाप कहते हैं तुम याद की पूरी नहीं करते हो। देरी तुम्हारी है। मैं तो आया हूं तुमको ले जाने। तुम घड़ी2 भूल जाते हो। मैं तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं। तुम मुझे घड़ी2 भूल जाते हो। भल कोई लिखते हैं बाबा हम 5घंटा याद में रहे। गपोड़ा लगाय देते हैं। यहां बैठे भी बुद्धि और2 तरफ चली जाती है। तुम यहां बैठे हो तो भी समझते हो शिवबाबा परमधाम से आय हमें सुनाते हैं। बुद्धियोग वहां रहना चाहिए। यहां उतर न आना चाहिए। जहां जाना है उनका ही नाम गाना है। शिवबाबा फिर चले जावेंगे। डेस्टीनेशन (मंजिल)को याद करना है। घर को और बाप को याद करो। घर कोई बाप नहीं है। तुम घर के मालिक को याद करते हो। यह समझो हमको स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। (तुमको) खुशी भी रहेगी। तुम जानते हो अभी वह अवस्था हुई नहीं है। इसलिए कहते हैं बाबा अभी लड़ाई न लगे तो अच्छा है। नहीं तो .....ब्रह्मा का ही योग नहीं लगता तो और बच्चों को क्या लगता होगा। इनके उपर तो बहुत रेस्पांसिबिलिटी है। इतने ढेर बच्चे हैं। कितना खयालात करनी पड़ती है। घर की सम्भाल बाप को ही रखनी होती है ना। बच्चों को भी कहते हैं कोई भी बात में राय आदि हो कि यह होना चाहिए तो बताओ। घर के मालिक हो ना। यहां के भी मालिक तो वहां के भी मालिक हो। देख—रेख करना चाहिए। बाबा यह होना चाहिए। विलायत में तो बहुत बड़े2 घर होते हैं। डेढ़ लाख की मोटर में चढ़ते हैं। वहां तो इतनी मिलकियत है बात मत पूछो। जैसे सिंगापुर के मालिक हों। अभी तुम देखो कहां मालिक बनते हो विश्व के। सो भी 21जन्मों लिए रेस पूरी करनी चाहिए। हम पूरा वर्सा लेवें। बाबा समझाते रहते हैं घर में सेंटर खोलो। ब्राह्मणियां तो सर्वेंट हैं। सबको रास्ता बताने सेवा करते रहते हैं। खुदा आकर भारत को स्वर्ग बनाते हैं। तो यह बच्चे भी खिजमत करते हैं। भारत सुखी होगा बाकी सब शांतिधाम चले जावेंगे। बाप है सबसे बड़ी अथॉर्टी। इनसे बड़ी कोई अथॉर्टी होती नहीं। वह है सब आत्माओं का बाप। यह है सभी मनुष्यों का बाप। दोनों बाप तुम्हारे सर्विस में हैं। रुहानी और जिस्मानी दोनों बाप सर्विस में हैं। रूह भी (प्योर) तो शरीर भी प्योर बनेगा। तुम बच्चे जानते हो हम बाप से पढ़ रहे हैं। बाप है निराकार। इनो याद नहीं करना है। फोटो भी निकालने नहीं देते। याद तो तुमको शिवबाबा को करना है। आत्मा को बाप को याद करना है। इस दादा को भी भूल जाना है। आत्मा की सगाई है शिवबाबा से। दलाल को थोड़े ही याद करना है। इसलिए इनका फोटो भी नुकसानकारक है। त्रिमूर्ति का भी चित्र रखने से सब याद आ जावेंगे। इसलिए शिवबाबा का ही चित्र अच्छा है। यह तो ज्ञान बुद्धि में है शिवबाबा कोई इतना बड़ा है थोड़े ही। अगर महीन रूप से याद नहीं कर सकते हैं तो अच्छा बड़ा रूप ही सही। अच्छा,मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बापदादा का यादप्यार,गुडमार्निंग। ओमशांति।